सनातन ॐ संवर्धिनी

द्वितीय वर्ष - प्रथम अंक

संस्थापक

संयोजक

शतचण्डी-महायज्ञ के भव्य पूजा-मण्डप

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी.) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्रः दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालयः भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाषः 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालयः गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैकटर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाषः 0172-2543283
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वारः 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

प्रो. पी. के. भारद्वाज

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. राज पाल विज

जीवनदायिनी माँ निर्जला

सनातन संस्कृति में प्रत्येक मास में अनेक व्रत–पर्व और उत्सवों को मनाया जाता है। इन सभी का अपना–अपना धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक महत्त्व है। वासन्ती एवं शारदीय नवरात्र, रामनवमी, कृष्णजन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली, वसन्त पंचमी, महाशिवरात्रि, होली आदि महत्त्वपूर्ण पर्वों के अतिरिक्त प्रत्येक मास व पक्ष में गणेश चतुर्थी, एकादशी, प्रदोषव्रत, अमावस्या एवं पूर्णिमा तिथियों को व्रत–उपवास, पूजा–अर्चना एवं दान का अपार महत्त्व शास्त्रों वर्णित है।

प्रत्येक तिथि का अपना एक अधिदेव होता है। एकादशी तिथि के देवता भगवान विष्णु है जो सृष्टि के पालनहार है। सामान्य वर्ष में 24 और अधिक मास में 26 एकादशी तिथियां आती हैं। एकादशी तिथियों में कामदा, मोहिनी, निर्जला, हरिशयनी, पवित्रा, रमा, योगिनी, हरिप्रबोधिनी, पुत्रदा, पाप मोचिनी आदि एकादशी तिथियों का अपना–अपना विशिष्ट महत्त्व है। पर मैं इन समस्त एकादशी तिथियों में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि – निर्जला एकादशी को सर्वोपरि स्थान देते हुए इसे सम्पूर्ण सृष्टि की जीवनदायिनी माँ के रूप में स्वीकार करता हूँ। अन्य सभी एकादशी तिथियों का पुण्य फल वैयक्तिक स्तर पर होता है। पर निर्जला एकादशी का पुण्य फल समष्टिगत एवं सम्पूर्ण मानवता के लिए होता है। यह तिथि मानव मात्र को जलीय तत्त्व के संरक्षण के माध्यम से विश्व कल्याण का महान सन्देश देती है।

21वीं शताब्दी में निर्जला एकादशी की प्रासंगिकता सर्वाधिक है। आज हमारे देश के अनेक प्रदेश सूखा–ग्रस्त हैं। करोड़ों लोगों के समक्ष पीने के पानी की समस्या है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां जीवन के मूलभूत संरक्षक जल को बोतलों में बन्द कर करोड़ों कमा रहे हैं। एक ओर सूखे की समस्या है तो दूसरी ओर वर्षा होने पर अनेक प्रदेशों में बाढ की समस्या आ जाती है। निर्जला एकादशी इन दोनों ही स्थितियों में हमें सन्तुलन बनाने के लिए प्रेरित करती है। माँ निर्जला जीवन के आधारभूत जल एवं जलीय पदार्थों की उपयोगिता को रेखांकित करती है। इस दिन व्रती स्वयं जल ग्रहण न कर या बहुत कम मात्रा में ग्रहण कर अपने हिस्से के जल को अन्य मानवों एवं प्राणियों में बांटते हैं, जलीय पदार्थ जैसे – खरबूजा, तरबूज, खीरा, दूध मिश्रित मीठा जल, जल पूर्ण कुम्भ आदि दान करते हैं। मेरी दृष्टि में जो व्रती केवल एक दिन ऐसा करने से स्वयं को संतुष्ट समझता है वह एकादशी के व्रत का पूर्ण फल प्राप्त नहीं कर सकता। एकादशी को जल का दान करने वाला यदि पूर्ववर्ती एवं परवर्ती तिथियों में जल का अपव्यय करता है, दूसरे के हिस्से का जल छीनता है या जल पर एकाधिकार जताता है तो उसका निर्जला एकादशी का व्रत निष्फल है।

वास्तव में निर्जला एकादशी जीवन के आधारभूत तत्त्व जल के संचय, संरक्षण और वितरण के संकल्प का दिवस है। निर्जल का अर्थ है – वैयक्तिक स्तर पर जल संग्रह के अत्यधिक मोह को त्यागकर सम्पूर्ण प्राणियों के लिए जल–संचय, जल–संरक्षण एवं जल–वितरण के मंगलमय भाव को जगाना, जल के अपव्यय को रोकना और उसकी एक–एक बूंद को अमृत समझ कर उसका सदुपयोग करना और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों में जल को परमात्मा का प्रसाद समझ कर प्रसाद की भांति सीमित मात्रा में ग्रहण करना। यदि निर्जला एकादशी के दिन व्रती या अव्रती इस कल्याणकारी भाव को स्वयं ग्रहण न कर पाये और दूसरो के हृदय में ऐसा भाव न जगा पाये तो उसका व्रत निरर्थक है।

वस्तुतः जल का दान जीवन का दान है। जल जीवन का पर्यायवाची है। इसलिए महाभारत में जल दान को सर्वोत्तम दान कहते हुए इसकी अपार महिमा का वर्णन किया गया है और मानवों को कूप, तड़ाग, वापी, प्याऊ आदि के माध्यम से जल दान के लिए प्रेरित किया गया है–

पानीयं परमं दानं दानानां मनुरब्रवीत्।

तस्मात् कूपांश्च वापीश्च तड़ागानि च खानयेत्।। म. भा. अनु. 65.3

जल का महत्त्व तो अन्न से भी अधिक है। अन्न से अधिक जीवन के लिए जल की आवश्यकता है। परमपिता परमेश्वर और माँ प्रकृति परम दयालु हैं। वे प्राणिमात्र को वह सब कुछ सहजरूप में प्रदान करते हैं जो उसके जीवन के लिए जरूरी हैं। जो वस्तु प्राणि जीवन के लिए जितनी अधिक उपयोगी और अनिवार्य है उन्होंने उसको उतनी ही अधिक मात्रा में सहज सुलभ बनाया है। हमें सबसे अधिक प्राण वायु (ऑक्सीजन) की आवश्यकता है। भगवान कितना दयालु है कि जहाँ–जहाँ हमारी नाक चलती है, वहां–वहां उसे प्रभूत मात्रा में प्राण वायु मिल जाती है। प्राण वायु के बाद जीवन के लिए जल की महती आवश्यकता है तो परमपिता ने पृथ्वी से तीन गुणा ज्यादा पानी की सृष्टि की है।

परन्तु प्राण वायु और जल में एक मूलभूत अन्तर है। प्राण वायु पर किसी व्यक्ति–विशेष, जाति–विशेष, क्षेत्र–विशेष और देश–विशेष का एकाधिकार नहीं हो सकता जबकि जल पर ऐसा करना संभव है और अनेक देश–प्रदेश ऐसा अमानवीय काम कर रहे हैं। आज शक्ति–सम्पन्न देशों में विभिन्न सागरों पर अपना–अपना आधिपत्य और एकाधिकार जमाने की होड़ लगी है। ब्रह्मपुत्र, रावी, व्यास, सतलुज आदि नदियों के जल–बंटवारे को लेकर भारत का अपने पड़ोसी देशों से विवाद है। अपने ही देश में नदियों के जल–बंटवारे को लेकर अड़ोसी–पड़ोसी राज्यों में झीना–झपटी है और आज तक केन्द्र सरकार तो क्या माननीय सर्वोच्च न्यायालय भी इन आपसी विवादों को सुलझा नहीं पाया है।

इन सब विवादों के निपटारे का एकमात्र उपाय है – मानव मात्र निर्जला एकादशी व्रत के महत्त्व को समझे। निर्जला एकादशी वास्तव में जल–संरक्षण एवं जल–वितरण के संकल्प का दिवस है। जल–संरक्षण और जल–वितरण दोनों में निष्काम भाव होना अनिवार्य है। इससे अनेक प्रकार के जल–बंटवारे सम्बन्धी विवादों का निपटारा हो जाएगा। हमारे ऋषि–मुनियों ने हज़ारों वर्ष पूर्व जल–संरक्षण एवं जल–वितरण के महत्त्व को बड़ी गम्भीरता से समझा था और इसे जनहित में कार्यान्वित करने का प्रयास भी किया था। इस तथ्य की पुष्टि हेतु कुछ प्रमाण प्रस्तुत हैं।

महाराज भगीरथ ने अपने तपोबल से न केवल 60 हजार सगर पुत्रों के उद्धार के लिए बल्कि प्रत्येक युग–काल एवं स्थान के कोटि–कोटि जनों के कल्याण के लिए पुण्य सलिला पतित पावनी माँ गंगा को पृथ्वी पर अवतरित किया है। सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में तपस्या कर रहे सात ऋषियों के सामने माँ गंगा का सात धाराओं में विभक्त होकर सात पवित्र सरोवरों की रचना करना एक प्रकार से गंगा के अमृतमय जल को सात गोत्र प्रवर्तक ऋषियों एवं उनकी संतति में बांट देने का मांगलिक उपक्रम है। सरस्वती नदी का नामकरण भी जल–संचय, जल–संरक्षण एवं वितरण के महत्त्व की ओर संकेत करता है। सरस्वती का अर्थ है – सरः+वती अर्थात् सरोवरों या तालाबों वाली सरिता (नदी)। यद्यपि आज सरस्वती की धारा विलुप्त है। पर इसके पौराणिक स्वरूप से स्पष्ट है कि यह पवित्र नदी आदिबद्रि से निस्सृत होकर कुरुक्षेत्र, पिहोवा, पोलड़ (महर्षि पुलस्त्य की तपस्थली) आदि अनेक तीर्थ स्थलों से प्रवाहित हुई है। वस्तुतः यह पवित्र नदी जिस महत्त्वपूर्ण स्थान से निकली वहां एक बहुत बड़े आकार के सरोवर का निर्माण कर दिया जो धार्मिक एवं पवित्र स्थल होने के साथ–साथ वहां के आस–पास के क्षेत्रों के निवासियों के जल की आपूर्ति का साधन बना। कुरुक्षेत्र के पवित्र तीर्थ ब्रह्मसरोवर और सन्निहित तीर्थ में पुराकाल में सरस्वती नदी का पवित्र जल ही प्रवहमान था। एक दिशा से पवित्र जल का प्रवेश होता था और इन बृहद् और विशालकाय सरोवरों को आपूरित कर जल पुनः दुसरे छोर से सरस्वती नदी के रूप में प्रवहमान हो जाता था। ऐसी ही स्थिति फल्गुतीर्थ, पिहोवातीर्थ एवं पोलड़तीर्थ की रही है। इन स्थानों पर बड़े–बड़े सरोवरों में जल संचय होता था। जल निरन्तर प्रवहमान भी था और सूखे की स्थिति में जल संचय जल की आपूर्ति कर देता था।

निर्जला एकादशी हमारे समाज को और सरकार को सरस्वती नदी जैसे लोक–कल्याणकारी महान प्रकल्पों को अपना कर जनहित में जल–संचय, जल–संरक्षण और जल–वितरण की प्रेरणा देती है। इससे जहां एक ओर बाढ पर नियन्त्रण होगा वहां दूसरी ओर सूखे की स्थिति में आस–पास के क्षेत्रों के निवासियों को जल की आपूर्ति संभव है। **आओ आगामी 16 जून, 2016 को जीवनदायिनी माँ निर्जला एकादशी के पावन दिवस पर हम सब भारतवासी जल–संचय, जल–संरक्षण और जल–वितरण के लोक–कल्याणकारी इस महान प्रकल्प को कार्यान्वित करने का संकल्प लें।**

– डॉ नन्दकिशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

CHARACTERISTICS OF SANATAN DHARMA

1. **Sanatan Dharma** is the oldest living religion of the world. It is original, eternal and universal religion of the **Upnishads, Gita** and the **Bhagwatam**.

2. It believes in the doctrin of **Action (Karma)** and provides the guidelines for all kinds of people of the world which, if followed, leads towards **God Realization**.

3. It contains the knowledge for the **Spiritual Well-being** of all souls irrespective of caste, colour or creed.

4. It considers **Death** as not the end of life, but is only just a necessary stage to renew life again and again until one is liberated i.e. free from Bondage.

5. It accords more than **Equal Status to Women** and places them before men even in general order of precedence, and wherever women are respected, the deities come to reside there.

6. It contains the knowledge for the spiritual well-being of all the souls, and is the **Embodiment of Indian Culture** which does believe in spiritualism rather than materialism.

7. It differentiats between **Civilization** and **Culture,** as civilization is related to body, outer progress, living style etc. and is changeable, while Culture, on the other hand, is related to soul **(Atma)** and is permanent.

- Dr. R.P. Vij

न्याय शास्त्र के प्रणेता - महर्षि अक्षपाद गौतम

न्यायशास्त्र के प्रणेता महर्षि गौतम के जन्म स्थल के विषय में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है। वैसे "वसुधैव कुटुम्बकम्" के परम पवित्र आदर्श महर्षिगण अपने तपोबल के प्रभाव से बीहड़ जंगल को भी नंदन कानन बनाकर अपनी कामना पूर्ण कर लिया करते थे।

उपलब्ध स्रोतों के अनुसार महर्षि गौतम का निवास जनक नंदिनी जानकी जी की जन्मस्थली मिथिला प्रदेश में रहा है। वे मिथिला प्रदेश के ज़िला सारन में सरयू के उपवन में गिरीव्रज के मणि नाग तीर्थ की कृषि रहित भूमि में आश्रम बना कर रह रहे थे। इसके प्रमाण के लिए यही तथ्य प्रतिपादित किए गए हैं कि इनके ज्येष्ठ पुत्र शतानंद जी महाराजा जनक के एवं उनके वंशजों के पुरोहित थे। जनकपुर के समीप महर्षि के आश्रम के चिन्ह मिलना और मिथिला के विद्वानों की न्यायशास्त्र में विशेष रूचि होना भी इस तथ्य को प्रमाणित करता है।

महर्षि ने त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) के समीप ब्रह्मगिरि पर्वत पर भी अनेक वर्षों तक तपस्या की थी। वहीं उनके तपोबल से गौतमी गंगा (गोदावरी) का आविर्भाव हुआ। पुष्कर में भी इन्होंने यज्ञ कराया था। हिमालय की कंदरा में अर्बुदाचल (अरावली) में भी इनकी निवास स्थली एवं तपस्थली रही है।

अक्षपाद

महर्षि गौतम को अक्षपाद अभिधान से भी सम्बोधित करते हैं। इस विषय में एक आख्यायिका प्रसिद्ध है कि एक बार महर्षि ने न्यायशास्त्र पूर्ण करने के पश्चात् अपना न्यायशास्त्र महर्षि वेदव्यास जी को बताया था, वेदव्यास जी उसे देखकर बड़े कुपित हुए और कहा - हे गौतम! तुमने अपने न्यायशास्त्र में जीव और ब्रह्म में भेद सिद्ध कर दिया, जबकि मैंने अपने ग्रन्थों में अद्वैत मत का प्रतिपादन किया है। अत: आज से न मैं तुम्हारे दर्शन करूंगा और न तुम मेरे दर्शन कर सकोगे। तब महर्षि ने अपना एक पैर आगे बढ़ाया और उसमें एक आंख की उत्पत्ति की। उस आंख से व्यास जी के दर्शन किए। महर्षि गौतम के इस अपूर्व तेज एवं पराक्रम को देखकर वेद व्यास जी बड़े प्रभावित हुए और उनको अक्षपाद से सम्बोधित करते हुए उनकी स्तुति की। तभी से इनका नाम अक्षपाद भी हो गया।

अहल्या परिचय

महर्षि गौतम की पत्नी अहल्या के सम्बन्ध में यह आख्यायिका बताई जाती है। ब्रह्मा जी ने मानसी सृष्टि से ऋषियों को उत्पन्न किया। उसी प्रकार से मानसी सृष्टि से सर्वप्रथम सम्पूर्ण सौंदर्यमयी विश्व को मंत्र मुग्ध करने वाली अनुपम सुन्दर नारी उत्पन्न की। उसका नाम अ-हल्या रखा गया। इसका अर्थ है पाप रहित अर्थात् मैथुनी सृष्टि से रहित। साधारण शब्दों में जो मैथुन द्वारा उत्पन्न हो वह हल्या है और जो मैथुन द्वारा उत्पन्न न हो, वह अहल्या है। लावण्मयी अहल्या को देखकर ऋषिगण चकित रह गए। देवराज इन्द्र को उसे प्राप्त करने की इच्छा हुई। उसने ब्रह्मा से अपनी अभिलाषा प्रकट की। ब्रह्मा जी ने उसे अनधिकारी समझकर कुछ समय बाद निर्णय देने के लिए कहा और इन्द्र को विदा कर दिया।

ब्रह्मा जी ने अहल्या के योग्य वर की खोज की। उस समय महर्षि गौतम हिमालय में तपस्यालीन थे। ब्रह्मा जी ने उनके पास जाकर संकेत करके कहा – आपके पवित्र आश्रम में रहकर यह कन्या हिमालय की प्राकृतिक सुषमा का आनन्द लेने की इच्छा रखती है। अत: आप इसे अपने आश्रम में कुछ समय के लिए धरोहर के रूप में रखें। महर्षि की मौन स्वीकृति पाकर ब्रह्मा जी अहल्या को महर्षि के आश्रम में छोड़कर प्रस्थान कर गये। कुछ समय व्यतीत हो जाने के बाद महर्षि गौतम ने सोचा कि संभवतया ब्रह्मा जी अपनी धरोहर को भूल गये, अत: वे स्वयं ही अहल्या को सौंपने के लिए ब्रह्मा जी के पास चले गए।

महर्षि गौतम की शालीनता, संयम एवं पवित्रता को देखकर ब्रह्मा जी इतने प्रभावित हुए कि अहल्या का पाणिग्रहण उन्हीं के साथ कर दिया। उधर इन्द्र को इस समाचार का पता चला तो वह अपनी वासना को अपूर्ण समझकर मन ही मन बड़ा दु:खी हुआ। उसने चन्द्रमा के सहयोग से उसे कुक्कट (मुर्गा) का रूप बनाकर असमय में ही ब्रह्म मुहूर्त का संकेत देकर महर्षि को गंगा स्नान के लिए भेजने की योजना बनाई और इस योजना के अनुसार एक दिन असमय में ही चन्द्रमा द्वारा कुक्कुट के बोलने के संकेत देकर महर्षि को गंगा स्नान के लिए भेज दिया और पीछे से इन्द्र ने गौतम ऋषि का छद्म रूप धारण कर अहल्या के पास पहुँचकर वासना पूर्ति की इच्छा प्रकट की। उधर गंगा मैया ने महर्षि को आकाशवाणी द्वारा उनकी गृहस्थी कलंकित होने का संकेत दिया। महर्षि तुरन्त ही वापिस आश्रम पर आ गए और चन्द्रमा तथा इन्द्र को वहां उपस्थित देखकर उन्हें श्राप दिया। चन्द्रमा को सदैव के लिए कलंकित कर दिया और इन्द्र को उसके शरीर में हजार भाग होने का श्राप दिया तथा अहल्या को पत्थर की शिला होने का श्राप दिया। श्राप देने के बाद महर्षि हिमालय में जाकर तपस्या में लीन हो गए।

महर्षि द्वारा दिए गए श्राप को सुनकर सब देवगण हाहाकार करने लग गए तथा सभी ने चन्द्रमा व इन्द्र के साथ महर्षि की स्तुति की और ब्रह्मा जी से प्रार्थना की। अन्त में ब्रह्मा जी ने महर्षि के श्राप का विमोचन कराया और इन्द्र के सहस्र भाग के स्थान पर सहस्राक्ष बनायें परन्तु उसका पद अस्थायी कर दिया। चन्द्रमा को सदैव के लिए कलंकित रखा तथा अहल्या का सौन्दर्य अन्य सब नारियों में वितरण कर भगवान राम के चरण स्पर्श से मानवी देह प्राप्त करने का आदेश दिया। इसके पश्चात् महर्षि हिमालय में चले गए। कालान्तर में जब महर्षि को आकाशवाणी से यह विदित हुआ कि अहल्या भगवान राम के चरण स्पर्श से मानव रूप में प्रकट हो गई है, तब वे हिमालय से वापिस आए और गृहस्थ धर्म का पालन किया। महर्षि के सबसे बड़ा पुत्र शंखनाद उत्पन्न हुआ जो बड़ा मेधावी था। इस प्रकार उनके 156 पुत्रों के उत्पन्न होने से कुल वृद्धि हुई तथा उन्हीं 156 पुत्रों व 12 शिष्यों सहित महर्षि ने राजा गुर्जर कर्ण के यहां पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था।

राजा गुर्जर के द्वारा आजीविका प्राप्त करने तथा उसके कुलगुरू होने के कारण आगे चलकर महर्षि गौतम के वंशज गुर्जर गौड़ नाम से सम्बोधित हुए।

– सुरेन्द्र कुमार जोशी
सेवानिवृत आर.ई.एस.
सूरतगढ़ (राजस्थान)

सनातन धर्म के सामने चुनौतियाँ

आज सनातन धर्म के सामने अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाए रखने के लिए कई समस्याएँ हैं, कई चुनौतियाँ हैं, कई प्रश्न हैं। प्रस्तुत पत्र में इनमें से कुछ समस्याओं और उनके समाधान के कुछ सुझावों की ओर संकेत किया गया है।

(क) मन्दिरों की व्यवस्था

मन्दिरों की व्यवस्था से सम्बन्धित निम्न समस्याएं हैं :- (1) अधिकतर मन्दिरों के परिसर में जूते आदि रखने के लिए निश्चित उचित स्थान नहीं होता जिससे उनकी सुरक्षा की समस्या बनी रहती है। ऐसे अवसरों का जूता-चोर लाभ उठाते हैं। कई भक्त तो चप्पल आदि अपने नीचे दबाकर बैठ जाते हैं ताकि वे जूता-चोरों से बच सकें। एक रामायणी प्रवचनकर्ता ने तो यह एक प्रकार का विचित्र नियम ही बना रखा है कि श्रोतागण अपने-अपने जूतों को एक लिफाफे में डाल कर पास रख लें क्योंकि जूता-गृह की व्यवस्था करना प्रबन्धकों के बस की बात नहीं। इस तरह की व्यवस्था को देखने का मौका स्वयं मुझे मिला है। जूता-गृह की व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए ताकि मन्दिर की, प्रवचन स्थल की पवित्रता बनी रहे।

(2) कुछ मन्दिरों में प्रवेश के लिए विशेष प्रकार का परिधान धारण करने की शर्त देखी गयी है। कुछ में महिलाओं/कन्याओं के प्रवेश का निषेध है। मूर्तियों के दर्शन में इस प्रकार का पक्षपात अथवा लिंग आदि के भेद की बात सर्वथा असहनीय है। इससे दर्शकों की आस्था खण्डित होती है।

(3) अनेक बड़े-बड़े मन्दिरों में शुल्क आदि देकर दर्शन करने में प्राथमिकता देने के नियम हैं। कितने खेद की बात है कि हम हिन्दू भगवान के दर्शन में भी भेद-भाव की व्यवस्था बनाए बैठे हैं। ऐसा भी देखने में कहीं-कहीं आया है कि मन्दिर में अलग-अलग स्थानों पर बैठने के लिए अलग-अलग मूल्य की टिकट निर्धारित है।

(4) प्राय: सभी मन्दिरों में अलग-अलग अवतारों/देवताओं की मूर्तियों को अलग अलग स्थानों पर प्रतिष्ठित करके उनके आगे दान-पात्र लगाए जाते हैं। प्रत्येक मूर्ति के आगे दान-पात्र की व्यवस्था अजीब लगती है। क्या मुख्य मूर्ति के सामने एक ही दान-पात्र पर्याप्त नहीं रहता ?

(5) लगभग सभी पुजारी सर्वत्र ब्राह्मण होते हैं। ऐसा क्यों ? और उनमें से भी बहुत से अर्धशिक्षित होते हैं जो धार्मिक ग्रन्थों के संस्कृत-श्लोकों का सही उच्चारण भी नहीं कर पाते। किसी संस्था विशेष में पुजारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था ही इसका समाधान है जहाँ उन्हें मंत्रों के शुद्ध उच्चारण, कर्मकाण्ड, मन्दिरों से सम्बन्धित सब प्रकार की जानकारी दी जाए। साथ ही प्रत्येक नगर में विद्वान कर्मकाण्डी पुरोहित/पुरोहितों की देख रेख में कुछ दिनों के वार्षिक शिविर लगाए जाएँ जिनमें उस नगर के सभी मन्दिरों के पुजारियों को निमंत्रित करके उन्हें दिशा-निर्देश दिए जाएँ। प्रशिक्षित पुजारियों का होना बहुत जरूरी है।

(6) मन्दिरों में "ऊँ जय जगदीश" आदि आरतियों के पदों में अनेकत्र एकरूपता नहीं मिलती। पुजारी सुविधानुसार आरती के कुछ पदों में परिवर्तन/परिवर्धन कर लेते हैं। इस पर अंकुश लगना चाहिए।

(7) बहुत बार मन्दिरों में फिल्मी टयूनों पर रचित भजन गाए जाते हैं। ऐसे में भजनों में श्रोताओं का, विशेष कर युवाओं का ध्यान फिल्मी गीतों पर अधिक जाता है, भजनों पर कम। इस प्रकार के भजनों पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए।

(8) छोटे मन्दिरों की बात छोड़िए, बड़े-बड़े मन्दिरों में भी न भोजन की व्यवस्था होती है, न ठहरने की। इससे दूर से आए हुए दर्शनार्थी पर्यटकों को बड़ी असुविधा रहती है। इस समस्या के समाधान में गुरुद्वारों के उदाहरण का अनुसरण किया जा सकता है।

(9) कुछ दो मंजिलें मन्दिरों में मूर्ति-स्थापना, कीर्तन, प्रवचन आदि ग्राऊँड-फ्लोर पर होता है और खाने-पीने आदि की व्यवस्था ऊपर की मंजिल पर होती है। यह सर्वथा अनुचित है। या तो भोजन आदि की व्यवस्था ग्राऊंड फ्लोर/बेसमेंट में हो या सर्वथा अलग जगह पर हो। गुरुद्वारों का उदाहरण इस सम्बन्ध में भी अनुसरणीय है।

(10) मन्दिरों के अधिकतर पुजारियों की आर्थिक दशा अत्यन्त शोचनीय देखी गयी है। उनका मासिक वेतन, वह भी यदि है तो बहुत ही कम होता है। परिवार तो उनका भी होता है। हम गृहस्थ की तरह उनकी भी शिक्षा, मकान, स्वास्थ्य आदि से सम्बन्धित समस्याएँ होती हैं जिन पर मोटा पैसा लगता है। अत्यन्त अल्प वेतन से तो ये समस्याएँ हल होने से रहीं। यही कारण है कि शिक्षित जन पुजारी नहीं बनना चाहते और बच्चों को किसी और व्यवसाय में डालने का प्रयास करते हैं। वेतन देने से ही इस समस्या का समाधान निकल सकता है।

(11) मन्दिरों में हाथ-पैर प्रक्षालन की उचित व्यवस्था भी होनी चाहिए।

(ख) धर्म परिवर्तन की समस्यां: कारण और निवारण

आज सनातन धर्म के सामने धर्म परिवर्तन की विकट समस्या है। प्रतिदिन हिन्दुओं के ही ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म आदि अन्य धर्मों में सम्मिलित होने के समाचार पढ़ने को मिल रहे हैं। हिन्दू धर्म में तो शायद ही कोई अन्यधर्मावलम्बी सम्मिलित हो रहा हो। इस समस्या पर अत्यन्त गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। आए दिन कुकुरमुत्तों की तरह नए गुरुओं की बाढ़ आ रही है।

धर्मपरिवर्तन करने वाले हिन्दू प्रमुख रूप से दो प्रकार के हैं - दरिद्र और निम्न जातियों के लोग। आज हिन्दू-समाज में निम्न जाति के लोगों को सम्मान प्राप्त नहीं है। इन के साथ हम समानता का व्यवहार नहीं करते। उदाहरणत: हम उनसे घरों में सफाई तो करा लेते हैं पर बर्तन-साफ कराने में संकोच करते हैं। हम उनके खाने-पीने के बर्तन अलग रखते हैं। हम उन्हें धार्मिक पदों पर नहीं लगाते, उनके साथ पारिवारिक सम्बन्ध नहीं रखते, उनके सामाजिक और धार्मिक उत्सवों में सम्मिलित नहीं होते, न ही उन्हें अपने उत्सवों में निमन्त्रित करते हैं, उनके साथ घरों में दुर्व्यवहार करते हैं। इस प्रकार के अनुचित आचरण से उनके मन में हमारे प्रति घृणा आदि भावों का आना सर्वथा स्वाभाविक है। जब तक हम गरीबों और निम्नजाति के लोगों के साथ समानता का व्यवहार नहीं करते, तब तक धर्मान्तरण की समस्या हल होने वाली नहीं है।

(ग) धार्मिक समस्याएँ

काफी समय से पत्रिकाओं/पिक्चरों/नाटकों आदि में सनातन धर्म की हर बात की खिल्ली उड़ाने की छूट रही है और हममें से शायद ही कोई उस का विरोध करता हो। आज हिन्दू धर्म के ग्रंथों के प्रकाशन की छूट है और हर प्रकाशक को पैसे के सिवाय कुछ नज़र नहीं आता। प्रकाशित धार्मिक ग्रंथ में कितनी ही अशुद्धियाँ हों, उनकी बला

से। आज श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि धर्मावतारों/देवी-देवताओं के अश्लील चित्र छापने पर भी कोई विशेष रोष प्रकट नहीं किया जाता। नए-नए तथाकथित धर्मगुरू अपनी-अपनी आरतियाँ रचवाने की होड़ में लगे हुए हैं। कई प्रवचन स्थलों पर और उनके निजी मन्दिरों आदि में धर्मगुरुओं की मूर्तियाँ विशाल और ऊँची होती हैं और श्रीराम, श्रीकृष्ण की मूतियाँ छोटी और नीचे होती हैं। हम हैं कि चुपचाप यह सब देखते रहते हैं।

हमारे देवी-देवताओं के प्रतीक चिन्हों पर तरह-तरह के प्रश्न उठाए जाते हैं और प्रतीकों के अर्थों को न जानने के कारण हम कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दे पाते। हमारे पुराणों, स्मृति ग्रन्थों, व्रतों, धार्मिक पुस्तकों के कुछ प्रसंगों पर कई तरह के आक्षेप किए जाते हैं।

एक बड़ी समस्या हिन्दू धर्म के तीर्थों से सम्बन्ध रखती है। भिखारियों की भरमार को देखकर ऐसा लगता है जैसे भारत भिखारियों की शरणस्थली है और दुनियाँ के सभी भिखमंगों ने यहीं डेरे जमा रखे हैं। हरिद्वार आदि तीर्थ स्थलों पर सायँ आरति के समय '**दान दो, दान दो**', की रट्ट लगाने वाले पाण्डे आरती की पवित्रता को ध्वस्त कर देते हैं। यह सब बंद होना चाहिए। गंगा, यमुना, कावेरी आदि पवित्र नदियों को मातृ-तुल्य मानने वाले हम हिन्दू उनके पवित्र निर्मल जल को प्रदूषित करने में क्या कुछ नहीं करते ? नगर का सारा मल, कूड़ा-करकट उनमें धकेल देते हैं।

प्रश्न उठता है कि इन समस्याओं का समाधान क्या है ? कुछ समस्याओं का समाधान तो स्वत: स्पष्ट है। कुछ समस्याओं के समाधान के लिए कतिपय सुंझावों पर विचार किया जा सकता है –

1. सनातन धर्म को पटरी पर लाने में सबसे बड़ा योगदान हमारे पूज्य शंकराचार्यों का हो सकता है। एस.जी.पी.सी. की तरह हमारे धर्माचार्यों से **अखिल भारतीय हिन्दू-मन्दिर-प्रबन्धकारिणी** के गठन के लिए हिन्दुओं के सहयोग से केन्द्रीय सरकार पर दबाव डालना चाहिए। इस प्रबंधकारिणी की आगे प्रांतीय स्तर पर शाखाएँ/प्रशाखाएँ बनाई जा सकती हैं।
2. मन्दिरों की स्थापना, निर्माण, मूर्ति प्रतिष्ठा, पुजारियों की नियुक्ति आदि से सम्बन्धित नियमों के निर्माण के लिए आचार्यों की एक विशेष समिति गठित की जाए।
3. हिन्दू धर्म के प्रचार के लिए एक मासिक पत्रिका का निकालना अत्यन्त आवश्यक है जिस में मन्दिरों, तीर्थों, व्रतों, धार्मिक ग्रंथों के आक्षिप्त स्थलों के समाधान, हिन्दू धर्म पर लगाए जाने वाले आक्षेपों के सतर्क उत्तर आदि की सामग्री को प्राथमिकता दी जाए।
4. नए धर्म गुरुओं को सनातन-परम्परा के नियमों का पालन करने के लिए मनाया जाए / प्रोत्साहित किया जाए।
5. एक शिक्षा-समिति का गठन किया जाए तो पाठ्य-पुस्तकों में सनातन धर्म विरोधी अंशों पर कड़ी नजर रखे। पिक्चरों आदि में दिखाए जाने वाले आपत्तिजनक दृश्यों, रचे गए और रचे जा रहे साहित्यिक, असाहित्यिक ग्रंथों/पत्रिकाओं आदि में पाए जाने वाले अनुचित संदर्भों को देखकर उन पर उचित कार्यवाही करें।

6. पुजारियों को तैयार करने के लिए शिक्षण संस्था/संस्थाएँ बनाई जाएँ जहाँ उन्हें कर्मकाण्डविधि या भजन-गायन व वाद्य-वादन का प्रशिक्षण दिया जाए, प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथों की शिक्षा दी जाए और प्रवचन कला सिखाई जाए। यह बहुत ही आवश्यक है। ऐसी संस्थाओं में तैयार हुए पुजारियों को मंदिरों में भेजा जाए। प्रशिक्षु छात्रों में हर जाति के लोग हों। इस समय मंदिरों में काम कर रहे पुजारियों के दिशा-निर्देश के लिए वार्षिक शिविरों की भी व्यवस्था की जाए।

7. धार्मिक ग्रंथों के प्रकाशन का कार्य गीता-प्रेस गोरखपुर के पास ही रहे तथा अन्य किसी प्रकाशक को प्रकाशन की अनुमति न हो।

8. धर्मान्तरण को रोकने के लिए कई उपाय किए जा सकते हैं। दलितों-दरिद्रों, निम्नजाति के लोगों की सहायता के लिए सक्रिय पग उठाएँ, मन्दिरों में प्रवेश पर किसी प्रकार का प्रतिबंध न हो। उनकी बस्तियों में मन्दिर बनाएँ, उनके मन्दिरों में जाएँ, उनके साथ बराबरी का व्यवहार करें, सहभोज करें आदि आदि।

9. तीर्थों की स्वच्छता-पवित्रता बनाए रखने के लिए प्रयास किये जाएँ। इसके लिए सरकार का सहयोग लेना अत्यन्त आवश्यक है। धर्माचार्य अनुयायियों को तीर्थों के प्रदूषण को दूर करने की प्रेरणा दे सकते हैं। शिविर लगा कर स्वयंसेवियों से तीर्थों की गन्दगी हटवा सकते हैं।

10. स्वास्थ्य संबंधी शिविरों का आयोजन लोगों में पैठ बनाने के लिए आवश्यक है।

11. हमारे कुछ संस्कार, उत्सव आदि आज जिस ढंग से मनाए जाते हैं उसे देखकर बड़ा दु:ख होता है। इन की पवित्रता पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। उदाहरणत: देवी के जगरातों की आज भरमार हो गयी है। इनमें 'भेंटें' गाने पर कम ध्यान दिया जाता है, फिल्मी टयूनों पर रचित तथाकथित भजनों पर कहीं अधिक। बहुत बार भजनीक सुरा आदि नशों में धुत देखे जाते हैं। कथा में ऊल-जलूल सी बेतुकी बातें जोड़ दी जाती हैं जो तर्कसंगत बिलकुल भी नहीं होती, पर हम में से शायद ही कोई आपत्ति करता हो।

विवाह संस्कार के समय पण्डित जी मंत्रों का उच्चारण करते हैं पर बाराती उनकी ओर ध्यान देने की बजाय बहुत बार पण्डित जी की खिल्ली उड़ाते हैं। इसी प्रकार पगड़ी-रस्म पर भी अधिकतर अव्यवस्था ही रहती है। इन सभी पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। इन सब के समाधान के लिए कुछ सुझाव निम्न हो सकते हैं -

(क) जगरातों में केवल भेंटें ही गाने की अनुमति हो। इन भेंटों की एक प्रकाशित पुस्तिका हो। कथा की भी एक पुस्तिका हो जिसमें कहानी को तर्कसंगत ढंग से प्रस्तुत किया गया हो।

(ख) विवाह-संस्कार विधि समीपवर्ती मन्दिर में हो जिससे इस संस्कार की पवित्रता भी बनी रहेगी और मंदिर की आमदनी भी बढ़ेगी।

(ग). पगड़ी रस्म पर गाए जाने वाले वातावरणोचित भजनों की पुस्तिका प्रत्येक मन्दिर के पुजारी के पास हो। गरूड़ पुराण में संस्कृत श्लोकों के हिन्दी में रूपान्तरित गेय पद्य भी हों तो बहुत अच्छा होगा।

- डॉ. सी. आर. नागपाल

पूर्व प्राचार्य, सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर)

अम्बाला छावनी

अर्द्धकुम्भ महापर्व पर हरिद्वार में आयोजित समारोहों का प्रतिवेदन

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजीकृत) एवं सनातन धर्म महाबीर दल पंजाब (पंजीकृत) के सौजन्य से 14 अप्रैल, 2016 को हरिद्वार में सम्पन्न हुए अर्द्धकुम्भ के पावन पर्व पर अनेक धार्मिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा एवं सनातन धर्म महाबीर दल ने अपनी संयुक्त बैठकों तथा अलग-अलग बैठकों में लगभग छह मास पूर्व ही इस पावन पर्व पर आयोजित किए जाने वाले विविध समारोहों एवं कार्यक्रमों के प्रारूप को तैयार करना प्रारम्भ कर दिया था। इस पावन पर्व पर आयोजित समारोहों एवं कार्यक्रमों की संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है -

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजीकृत द्वारा शतचण्डी यज्ञ का आयोजन -

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की हरिद्वार समिति ने इस वर्ष अर्द्धकुम्भ के अवसर पर पड़ने वाले वासन्ती नवरात्रों को ध्यान में रखते हुए महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती स्वरूपा भगवती जगदम्बा की विशेष आराधना एवं पूजा-अर्चना के लिए शतचण्डी महायज्ञ करने हेतु प्रतिनिधि सभा को अपनी संतुति प्रेषित की तथा प्रतिनिधि सभा ने मुक्त कण्ठ से इस प्रस्ताव की प्रशंसा करते हुए इस पावन अवसर पर शतचण्डी यज्ञ के अनुष्ठान की स्वीकृति प्रदान की।

नवसंवत्सर के अवसर पर 8 अप्रैल, 2016 को प्रथम नवरात्र से ही माँ जगदम्बा की पूजा-अर्चना प्रारम्भ हो गई थी। वृष राशि में स्थित उच्च चन्द्रमा एवं सर्वार्थ सिद्धि योग की गोचरीय स्थिति में वासन्ती नवरात्रों की पंचमी तिथि सोमवार दिनांक 11 अप्रैल, 2016 को विशेष मुहूर्त में शतचण्डी यज्ञ का श्रीगणेश हुआ। दुर्गासप्तशती के 108 पाठ करने के लिए शास्त्र मर्मज्ञ 15 आचार्यो का पुरोहितों के रूप में वरण किया गया। जगद्देव सिंह संस्कृत कॉलेज के सेवानिवृत्त प्राचार्य एवं कर्मकाण्ड मर्मज्ञ आचार्य कान्ता प्रसाद बडौला तथा सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार के मन्दिरों के प्रधान पुजारी श्री सुबोध शर्मा जी ने संयुक्तरूप से प्रधान पुरोहितों के दायित्व का निर्वाह किया। शतचण्डी यज्ञ के लिए सप्तऋषि आश्रम की यज्ञशाला के दिव्य पवित्र स्थल का चयन किया गया। शतचण्डी यज्ञ की आराध्या मां भगवती दुर्गा की प्रधान पूजा एवं उपांग पूजा, कलश पूजा, चतुःषष्टि योगिनी पूजा, षोडशमातृका पूजा, वास्तु पूजा, क्षेत्रपाल पूजा, नवग्रह पूजा एवं मां जगदम्बा के परिवार पूजन के लिए यज्ञशाला की प्रत्येक दिशा एवं कोण में शास्त्रीय दिशा-निर्देशों के अनुसार विभिन्न पूजा-मण्डपों एवं पीठों को बनाया तथा सजाया गया।

प्रतिनिधि सभा के महासचिव डॉ देशबन्धु, प्रचार मंत्री डॉ नन्दकिशोर शर्मा, श्री डी. आर मदान एवं उनकी सहधर्मिणी, श्री यशपाल शर्मा, श्री रिभु गोस्वामी, बहन अंजना, आश्रम के कर्मचारीगण तथा समय-समय पर पधारे अन्य अनेक आगंतुक भक्त जनों ने प्रतिदिन सुबह-शाम मां जगदम्बा व अन्य देवी-देवताओं एवं ग्रहों की विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। प्रतिनिधि सभा के महासचिव डॉ देशबन्धु ने सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब

के प्रतिनिधि के रूप में सभी आचार्यों/पंडितों का वरण कर मुख्य यजमान की भूमिका निभाई। दिनांक 13 अप्रैल, 2016 को भगवान सूर्य के मेष राशि में संक्रमण करने पर शुभ मुहूर्त में प्रतिनिधि सभा के सभी यजमान सदस्यों ने हर की पौड़ी पर पतित पावनी मां गंगा में स्नान कर पुण्य लाभ अर्जित किया।

दुर्गा सप्तशती के 108 पाठों का पारायण सम्पन्न हो जाने पर 13 अप्रैल, 2016 को वासन्ती नवरात्रों की सप्तमी तिथि की रात्रि को पुनर्वसु नक्षत्र के योग में शतचण्डी यज्ञ का शुभारम्भ हुआ और 108 दुर्गा पाठों के दशांश रूप में हवन, तर्पण, मार्जन आदि की शास्त्रीय विधियां मध्य रात्रि तक सम्पन्न हुई। 14 अप्रैल, 2016 को दुर्गाष्टमी के दिन प्रात: मां जगदम्बा की आरती के पश्चात् कन्या-पूजन किया गया। कन्या-भोज के पश्चात् सभी भक्तजनों को प्रसाद वितरित किया गया। ग्रह-विसर्जन के पश्चात् शतचण्डी यज्ञ सम्पूर्णता को प्राप्त हुआ।

सनातन धर्म महाबीर दल रजि. के सेवा प्रकल्पों की रिपोर्ट -

श्री सनातन धर्म महाबीर दल रजि. पंजाब ने अर्द्धकुम्भ के पावन पर्व पर हरिद्वार में मेला प्रशासन हरिद्वार द्वारा दी गई भूमि पर चण्डीघाट क्षेत्र में 6 अप्रैल, 2016 से अपना सेवा शिविर लगाया। इस सेवा शिविर में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, चण्डीगढ़, राजस्थान, उत्तराखण्ड, जम्मू, उत्तर-प्रदेश आदि प्रदेशों के स्थानीय महाबीर दल के घटकों के प्रतिनिधि के रूप में पधारे हुए 371 स्वयं सेवकों एवं शक्ति दल की स्वयं सेविकाओं ने हरिद्वार मेला प्रशासन द्वारा विविध प्रकार की सेवा करने के लिए आबंटित किए गए विभिन्न क्षेत्रों जैसे चण्डीघाट, गौरीशंकरद्वीप, कपूरथला हाऊस, हर की पौड़ी, जगत गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के पण्डाल आदि में अपनी निष्काम सेवाएँ प्रदान की। अर्द्धकुम्भ अवसर पर धर्म प्रचार के लिए सेवा शिविर में प्रसिद्ध रामायणी श्री मारुतिनन्दन जी के श्रीमुख से भगवान राम की पावन कथा प्रस्तुत की गई।

डॉ. देशबन्धु कार्यालय एवं वित्त मंत्री, श्री सुभाष राणा, रत्न लाल शर्मा, सुभाष खुंगर, प्रांतीय मेला मंत्री ने अपना-अपना कर्त्तव्य निभाते हुए समय-समय पर स्थानीय महाबीर दल घटकों एवं स्वयं सेवकों को पत्राचार एवं दूरभाष आदि के माध्यम से सेवा शिविर सम्बन्धी समस्त जानकारी प्रेषित की एवम् अर्द्धकुम्भ मेला को सफल बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पंडित आर. के. कौशिक, डॉ सतपाल अग्रवाल, जनकराज बावा, सतवन्त सिंह सूदन, विवेक शर्मा, रत्नलाल शर्मा, अशोक शर्मा, जगबीर सिंह पहलवान, बंताराम, राम स्वरूप सिंघला, राजविन्द्र शर्मा, राकेश कोहली, सतवीन्द्र सिंह, सुरेश शर्मा आदि ने महाबीर दल के प्रधान के साथ पूरे वर्षभर समय-समय पर हरिद्वार पहुँच कर कैम्प को सफल बनाने में योगदान दिया। इसके साथ ही सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के प्रबन्धक श्री विनोद सैणी, उप-प्रबन्धक श्री सतप्रकाश सक्सेना तथा अखिलेश कुमार, जितेन्द्र सैणी व आश्रम के अन्य कर्मचारियों का सेवा शिविर को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग रहा है। कैम्प लगाने की तैयारी एक महीना पहले शुरू कर दी गई। फलस्वरूप जो कैम्प 10 अप्रैल से शुरू होना था वह सब स्वयंसेवकों की मेहनत से 6 अप्रैल, 2016 को ही शुरू हो गया। मेला प्रशासन द्वारा हमें हर संभव सहायता प्रदान की गई।

सेवा शिविर का प्रारम्भ ध्वजारोहण तथा हनुमान चालीसा के पाठ से हुआ। उत्तराखण्ड के माननीय मुख्यमंत्री के.ओ.एस.डी. श्री पुरुषोत्तम शर्मा ने अपने करकमलों से ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण समारोह में महाराज सतपाल जी ब्रह्मचारी 1008, महन्त देवश्री जी महाराज लहरा गागा वाले, डॉ राजेश रस्तोगी, प्रो. नरेश चौधरी संयोजक तथा सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महासचिव डॉ देशबन्धु, प्रचार मंत्री डॉ नन्दकिशोर शर्मा, श्री डी. आर. मदान, श्री यशपाल शर्मा तथा श्री रिभु गोस्वामी शिविर में विशेष रूप से पधारे।

महाबीर दल के सेवा शिविर का नाम सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के संस्थापक भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी के नाम पर रखा गया। सेवा शिविर के मुख्य द्वार का नाम त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज के नाम पर तथा लंगर हाल का नाम महाबीर दल के पूर्व प्रधान प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाजसेवी पं. अमरनाथ शर्मा जी के नाम पर रखा गया। महाबीर दल नंगल डैम शाखा ने लंगर की सेवा का काम संभाला। लंगर का काम शाम सुन्दर जौशी, राम स्वरूप सिंगला, विशम्भरदास डिंगरा की अध्यक्षता में हुआ। लंगर के लिए राशन श्री विशम्भरदास जी डींगरा, सुभाष खुराना, नन्दकिशोर, पी.के. अग्रवाल, वेदप्रकाश आदि ने लुधियाना से किया। राशन संग्रह में दण्डी स्वामी पीठ लुधियाना का विशेष योगदान रहा है। कुछ राशन मलेर कोटला से भी प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार ज़िला पटियाला, राजस्थान, हरियाणा, ज़िला अमृतसर, कोटकपूरा, गुरदासपुर, मोगा, दिल्ली, जालंधर, अबोहर फाज़िलका तथा ज़िला संगरूर का धन और राशन के संग्रह में विशेष योगदान रहा है। जालंधर से प्रो. भारद्वाज तथा भटिण्डा से मदन लाल लहरी, तरसेम शर्मा, जिला मानसा से सतपाल मानसा, मेघराज बोहा आदि का भी धन और राशन संग्रह में व्यक्तिगत स्तर पर योगदान रहा है। डॉ सतपाल ने पूरे एक सप्ताह प्रधान जी के साथ भ्रमण कर कैम्प को सफल बनाने में योगदान किया।

कुम्भ मेला शिविर के सफल संचालन में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान आदरणीय डॉ शिव कुमार शर्मा व अन्य पदाधिकारियों - कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी, महासचिव गोस्वामी सरदारी लाल, उपेन्द्र शर्मा जी, डॉ देशबन्धु, वित्त एवं कार्यालय मंत्री डॉ आर. पी. विज व कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रतिनिधि सभा ने सेवा शिविर के लिए दो लाख रुपए की सहायता राशि स्वीकृत कर तथा उसे यथा समय प्रदान कर महाबीर दल के स्वयं सेवकों को अनुगृहीत किया है। इसके लिए महाबीर दल के प्रधान व समस्त स्वयंसेवक सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं समस्त कार्यकारिणी का आभार व्यक्त करते हैं। हम उन सभी सरकारी और गैर-सरकारी अधिकारियों, कर्मचारियों, स्वयं सेवकों एवं दानी महानुभावों का भी आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस सेवा शिविर को सफल बनाने में समय-समय पर हमारी सहायता की है।

सम्मान-समारोह-

30 अप्रैल, 2016 को मेला प्रशासन के अधिकारियों तथा महाबीर दल के स्वयं सेवकों को सम्मानित करने के लिए सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के स्वामी रामतीर्थ हाल में सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। इस सम्मान

समारोह में उत्तराखण्ड सरकार की ओर से मेला प्रशासन से सम्बद्ध पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री जी.एस. मरतोलिया, मेला अधिकारी श्री एस.ए. मुरगेशसन, अपर मेला अधिकारी सुश्री निधि यादव एवं श्री मेहरबान सिंह बिस्ट, अपर पुलिस अधीक्षक श्रीमती श्वेता चौबे, संयोजक प्रो. नरेश चौधरी, सी.ओ. पुलिस श्री जे.पी.जुमाल, मुख्य नगर अधिकारी श्रीमती विप्रा त्रिवेदी एवं अन्य अनेक गणमान्य अधिकारियों ने भाग लिया। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा की ओर से इस समारोह में महासचिव डॉ देशबन्धु जी, उप-प्रधान श्री सुधीर गुप्ता जी, प्रचार मंत्री डॉ नन्दकिशोर शर्मा, श्री छज्जुराम जी व श्री रविन्द्र शर्मा जी आदि अनेक प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

जगद्देव सिंह संस्कृत विद्यालय के छात्रों ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर समारोह का शुभारम्भ किया। सनातन धर्म महाबीर दल के प्रधान महंत स्वरूप बिहारी शरण ने समारोह में उपस्थित समस्त अधिकारियों, स्वयं सेवकों एवं अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए उनके प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया। डॉ देशबन्धु ने सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के 90 वर्ष से अधिक के सेवाधर्मी गौरवमय इतिहास पर प्रकाश डाला और मेला प्रशासन को विश्वास जताया कि सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा तथा महाबीर दल धर्म-प्रचार, शिक्षा-विस्तार, समाज-कल्याण एवं राष्ट्र-उत्थान के अपने सेवाधर्मी प्रकल्पों को निरन्तर कार्यान्वित करते रहेंगे। डॉ नन्दकिशोर शर्मा प्रचार मंत्री ने सनातन संस्कृति में कुम्भ महापर्व के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए महाबीर दल के सेवा शिविर में अधिकृत किए गए विभिन्न प्रकल्पों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इस अवसर पर गंगा सभा हरिद्वार के प्रधान श्री पुरुषोत्तम शर्मा ने अपने उद्बोधन में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा एवं महाबीर दल के सेवाधर्मी कार्यकलापों को भूरि-भूरि प्रशंसा की। मुख्यातिथि के रूप में पधारे पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री जे.एस. मरतोलिया ने अपने सम्बोधन में कहा कि सेवा धर्म के प्रति जो निष्ठा महाबीर दल के स्वयं सेवकों में है वह किसी अन्य सरकारी या गैर-सरकारी व्यक्ति में मिलनी दुर्लभ है। मेला अधिकारी श्री एस. ए. मुरगेशन ने कहा कि महाबीर दल के स्वयं सेवक अपने आराध्य राम भक्त महाबीर हनुमान की भाँति निष्काम सेवा करते हैं और प्रशासन इनका ह्रदय से आभारी है। उन्होंने महाबीर दल के स्वयं सेवकों एवं प्रतिनिधि सभा का आभार व्यक्त करते हुए विश्वास जताया कि आगामी कुम्भों में भी प्रशासन को इन समाजसेवी धार्मिक संस्थाओं का सहयोग मिलता रहेगा। इस अवसर पर जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय के योगाचार्य के छात्रों ने सूर्य नमस्कार के माध्यम से विभिन्न यौगिक क्रियाओं को दिखाते हुए सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह की समाप्ति पर सभी के लिए सहभोज की व्यवस्था की गई थी।

- डॉ. नन्द किशोर शर्मा
प्रचार मंत्री

S.D. Phullarwan Girls Sr. Sec. School,
New Railway Colony, Jalandhar
Annual Result for the Session 2015-16 of Class XII

Class	Students Appeared	Pass	Pass Percentage	Board Percentage	Plus/ Minus
XII Arts	55	55	100	73.03	+26.97
XII Commerce	28	28	100	85.99	+14.01
XII Science	12	12	100	86.40	+13.60

NAME OF THE STUDENTS SCORING ABOVE 80% MARKS

DEEKSHA
Science - 93%

NEETIKA
Science - 86%

BABY
Commerce - 88%

MUSKAN
Commerce - 87%

PREETI
Commerce - 87%

PRIYANKA
Commerce - 86%

NEERU
Commerce - 85%

KIRAN
Commerce - 84%

DIVYA
Commerce - 88%

CHARANJEET
Commerce - 81%

KAJAL
Commerce - 81%

ANITA DEVI
Arts - 91%

KAJAL DEVI
Arts - 89%

PADMA LAMO
Arts - 89%

HIMANI
Arts - 81%

BHAWNA
Arts - 83%

RAJNI
Arts - 82%

RUMA
Arts - 83%

TASHI YANZES
Arts - 85%

TEWANG LAMO
Arts - 81%

सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार में अर्द्ध कुम्भ पर आयोजित
शतचण्डी-महायज्ञ में पूजा-अर्चना करते भक्तजन

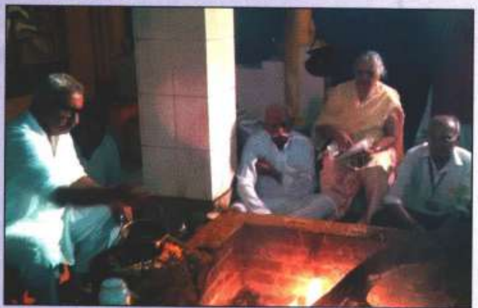

श्री जगद्देव सिंह संस्कृत कॉलेज, सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार के
प्राचार्य श्री कान्ता प्रसाद बडौला के सेवा निवृत्ति समारोह की झलकियाँ

स. ध. महावीर दल के तत्त्वावधान में अर्द्ध कुम्भ (हरिद्वार) पर आयोजित सेवा-शिविर के सेवा-प्रकल्पों के मनोरम दृश्य